पाठ 3: जयशंकर प्रसाद (आत्मकथ्य)

पाठ का सार (Summary):
मुंशी प्रेमचंद के संपादन में 'हंस' पत्रिका का एक 'आत्मकथा विशेषांक' निकलना तय हुआ था। प्रसाद जी के मित्रों ने उनसे भी आत्मकथा लिखने का आग्रह किया। प्रसाद जी इसके लिए सहमत नहीं थे और इसी असहमति के तर्क से यह कविता 'आत्मकथ्य' पैदा हुई। कवि का मानना है कि उनका जीवन एकदम साधारण रहा है, उसमें ऐसा कुछ भी महान या रोचक नहीं है जिसे पढ़कर लोगों को सुख या प्रेरणा मिले। उनका जीवन तो एक खाली 'गागर' (घड़े) के समान है। जीवन के जो सुखद पल थे, वे बस स्वप्न बनकर ही रह गए। इसलिए कवि अपनी सोई हुई व्यथाओं (दुःखों) को जगाकर आत्मकथा के रूप में जग-हँसाई का कारण नहीं बनना चाहते।

प्रश्न-अभ्यास (NCERT Solutions)

प्रश्न 1. कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहता है?

कवि आत्मकथा लिखने से निम्नलिखित कारणों से बचना चाहता है:

1. कवि को लगता है कि उनका जीवन बहुत ही साधारण है। उसमें ऐसी कोई महान उपलब्धि या गौरवगाथा नहीं है जिसे सुनाकर वे वाहवाही लूट सकें।

2. आत्मकथा लिखने का अर्थ है अपनी कमज़ोरियों और भूलों को दुनिया के सामने रखना। कवि अपनी भूलों को उजागर करके जग-हँसाई नहीं करवाना चाहता।

3. उनके जीवन में कुछ मधुर यादें हैं, जो उनके लिए अत्यंत निजी हैं। वे इन निजी पलों को दूसरों के साथ बाँटना नहीं चाहते।

4. कवि की पीड़ाएँ (व्यथाएँ) अभी शांत हैं और सो रही हैं, वे आत्मकथा लिखकर उन्हें दोबारा जगाना नहीं चाहते।

प्रश्न 2. आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में 'अभी समय भी नहीं' कवि ऐसा क्यों कहता है?

कवि ऐसा इसलिए कहता है क्योंकि उनके अनुसार उनके जीवन में अभी ऐसी कोई बड़ी सफलता या महान उपलब्धि प्राप्त नहीं हुई है जिसे दुनिया को सुनाया जा सके। इसके अलावा, कवि के जीवन के जो दुःख और कष्ट थे, वे अब समय के साथ शांत हो गए हैं, 'सो रहे हैं'। वे उन पुरानी दर्द भरी यादों को ताज़ा करके फिर से दुःखी नहीं होना चाहते। इसलिए वे कहते हैं कि आत्मकथा लिखने का अभी सही समय नहीं आया है।

प्रश्न 3. **स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का क्या आशय है?**

'पाथेय' का अर्थ होता है रास्ते का भोजन या सहारा (जो यात्रा में काम आता है)। कवि के जीवन का सफर दुःखों से भरा रहा है। ऐसे में उनकी जो कुछ मधुर और सुखद स्मृतियाँ (यादें) हैं, वे ही उनके जीवन की आगे की यात्रा (सफर) का सहारा (पाथेय) हैं। उन्हीं मीठी यादों के सहारे कवि अपना जीवन जी रहे हैं। स्मृति को पाथेय बनाने का आशय जीवन में बीते हुए सुखद पलों को ही जीने का एकमात्र सहारा मानना है।

प्रश्न 4. **भाव स्पष्ट कीजिए-**

(क) मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया। आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।

(ख) जिसके अरुण कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में। अनुरागिनि उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।

(क) भाव: कवि कहते हैं कि उन्होंने अपने जीवन में जिन सुखों की कल्पना की थी या जो सपने देखे थे, वे सुख उन्हें असल जीवन में कभी नहीं मिले। जैसे ही वे उस सुख के करीब पहुँचते थे (उसे आलिंगन में लेने वाले होते थे), वह सुख उन्हें चिढ़ाकर, मुस्कुराकर दूर भाग गया। अर्थात् कवि का जीवन खुशियों से हमेशा वंचित ही रहा।

(ख) भाव: इन पंक्तियों में कवि अपनी प्रेयसी (प्रेमिका/पत्नी) के रूप-सौंदर्य का वर्णन कर रहे हैं। वे कहते हैं कि उनकी प्रेयसी के गाल (अरुण कपोल) इतने लाल और सुंदर थे कि स्वयं सुबह (उषा) भी अपनी ललाई (सिंदूरी रंग) उसी के गालों से उधार लिया करती थी। अर्थात् उनकी प्रेयसी भोर की लालिमा से भी अधिक सुंदर थी।

प्रश्न 5. **'उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की'- कथन के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?**

इस कथन के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि उसने अपनी प्रेयसी (या पत्नी) के साथ मधुर चाँदनी रातों में जो हसीन और प्रेम भरे पल बिताए थे, वे उसकी निजी (Personal) संपत्ति हैं। वे सुखद यादें ही उसके जीवन का एकमात्र सहारा हैं। उन अत्यंत निजी पलों को वह आत्मकथा लिखकर पूरी दुनिया के सामने कैसे प्रकट कर दे? उन यादों को सरेआम (सार्वजनिक) करना उसे उचित नहीं लगता।

प्रश्न 6. 'आत्मकथ्य' कविता की काव्यभाषा की विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखिए।

इस कविता की काव्यभाषा की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. **खड़ी बोली का प्रयोग:** कविता में संस्कृतनिष्ठ (तत्सम शब्दों से युक्त) शुद्ध खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग हुआ है। उदाहरण: 'पाथेय', 'स्मृति', 'अनंत नीलिमा'।

2. **मानवीकरण अलंकार:** कवि ने जड़ वस्तुओं में मानवीय क्रियाओं का आरोप किया है। उदाहरण: 'अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं' (सरलता का मानवीकरण)।

3. **बिंब विधान और प्रतीकात्मकता:** कवि ने अपनी व्यथा को प्रतीकों के माध्यम से उभारा है। उदाहरण: 'रीति गागर' (खाली घड़ा) खाली जीवन का प्रतीक है।

4. **अनुप्रास और रूपक अलंकार:** भाषा में संगीतात्मकता और सौंदर्य है।

प्रश्न 7. कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था उसे कविता में किस रूप में अभिव्यक्त किया है?

कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था, उसे उन्होंने एक ऐसे छलावे के रूप में अभिव्यक्त किया है जो उनके करीब आते-आते दूर भाग गया। उन्होंने उसे 'मधुर चाँदनी रातों' में अपनी प्रेयसी के साथ बिताए गए उन पलों के रूप में चित्रित किया है, जब वे खिलखिलाकर हँसा करते थे। परन्तु वह सुख स्थायी नहीं था; वह एक सपने की तरह आया और टूट गया, जिससे कवि को जीवन में केवल निराशा ही हाथ लगी।

Schorbit